Think IAS...

दृष्टि *The Vision*

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मानचित्र आधारित प्रश्न

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: CSHS11

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

इतिहास (वैकल्पिक विषय)

मानचित्र आधारित प्रश्न

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : **1800-121-6260**
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1.	पुरापाषाण काल	5–10
2.	मध्यपाषाण काल	11–13
3.	नवपाषाण काल	14–22
4.	हड़प्पा सभ्यता	23–28
5.	ताम्रपाषाण काल	29–35
6.	महापाषाण काल	36–38
7.	वैदिक काल	39–44
8.	महाजनपद काल	45–47
9.	मौर्य काल	48–57
10.	मौर्योत्तर काल	58–71
11.	गुप्त काल	72–77
12.	गुप्तोत्तर काल	78–83
13.	राजपूत काल	84–91

अध्याय
1

पुरापाषाण काल
(Palaeolithic Age)

मैप-1.1

(i) **टेरी स्थल (8°42'N–8°19'N और 78°2'E–77°57'E)**- टेरी स्थल तमिलनाडु में स्थित है। यहाँ से सैकड़ों पुरापाषाणकालीन एवं मध्यपाषाणकालीन औज़ार प्राप्त हुए हैं। 2011 में यहाँ से 6 छोटे-छोटे मध्यपाषाणकालीन स्थल प्राप्त हुए हैं। जिस प्रकार के ज्यामितीय प्रारूप टेरी से प्राप्त हुए हैं ठीक वैसे ही श्रीलंका के मध्यपाषाणकालीन स्थलों से प्राप्त हुए हैं।

(ii) **पल्लवरम (12°98'N–80°18'E)**- यह तमिलनाडु राज्य के चेन्नई ज़िले में स्थित है। चेन्नई से पल्लवरम् की दूरी मात्र 17 किमी. है। यह पुरापाषाणकाल से संबंधित स्थल है। ब्रिटिश पुरातत्त्वशास्त्री राबर्ट ब्रुस फ्रुट ने 1864 में यहाँ पुरापाषाणकालीन औज़ारों की खोज की थी। आगे अंग्रेजों एवं फ्राँसीसियों के मध्य सेंट टोमे की लड़ाई इसी पल्लवरम् के नज़दीक हुई। यह स्थल मद्रास संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है।

(iii) **अतिरंपक्कम (13°13'N–79°53'E)**- तमिलनाडु राज्य में चेन्नई के निकट स्थित है। यहाँ से प्राचीन मानव के द्वारा प्रयोग की जाने वाली पत्थर की कुल्हाड़ी प्राप्त हुई है। यह कुल्हाड़ी और अन्य पत्थर के औज़ार लगभग 15 लाख वर्ष पुराने हैं। यहाँ मिश्रित एबीवेली तथा ऐशुली उपकरण प्राप्त हुए हैं तथा मद्रास संस्कृति से संबंधित प्रारंभिक तथा मध्यपाषाणयुगीन उपकरण भी प्राप्त हुए हैं।

(iv) **रेनीगुंटा (13°65'N–79°52'E)**- वर्तमान में यह आंध्र प्रदेश के चित्तूर ज़िले में स्थित है। यहाँ उच्च पुरापाषाणकाल से संबंधित संस्कृति पाई गई है। यहाँ पुरापाषाणकाल से संबंधित कई पाषाण उपकरण भी पाए गए हैं।

(v) **पटने (15°52'N–74°13'E)**- महाराष्ट्र के कोल्हापुर ज़िले में स्थित एक गाँव है। यहाँ से पुरापाषाणकाल की कला का एक नमूना प्राप्त हुआ है। यह नमूना एक शुतुरमुर्ग का अंडा है जिसमें रेखाचित्र बने हुए हैं। इसके अलावा क्वार्ट्ज़ाइट तथा जैस्पर के बने हुए उपकरण भी प्राप्त हुए हैं।

(vi) **बोरी (18°7'N–74°44'E)**- महाराष्ट्र राज्य में **मुंबई के निकट** स्थित एक कस्बा है। यहाँ से कुछ वर्ष पूर्व मानव उपस्थिति के प्रारंभिक साक्ष्य मिले हैं। इन साक्ष्यों के आधार पर भारत में मानव की उपस्थिति का आकलन 14 लाख वर्ष पूर्व तक पहुँच जाती है। कुल्हाड़ी, खंडक के प्रारंभिक उपयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

(vii) **नेवासा (19°32'N–74°56'E)**- यह वर्तमान में महाराष्ट्र राज्य के अहमदनगर ज़िले में स्थित है। यह मध्य पुरापाषाणकालीन पत्थर उपकरणों का एक प्रारूप स्थल (Model Place) माना जाता है। अब मानव ने क्वार्ट्ज़ाइट पत्थर के स्थान पर चर्ट और जैस्पर पत्थरों का उपयोग प्रारंभ कर दिया था। नेवासा इन्हीं उपकरणों से संबंधित है। आगे नेवासा ताम्रपाषाणकाल से भी संबंधित हो जाता है।

(viii) **भीमबेटका (22°55'N–77°35'E)**- भीमबेटका का संबंध महाभारत के भीम से जोड़ा जाता है। पहले इसका नाम भीमबैठका (Sitting Place of Bhima) था। वर्तमान में यह भोपाल से 35 किलोमीटर दक्षिणी मध्य प्रदेश के रायसेन ज़िले में स्थित है। यहाँ से पुरापाषाणकाल एवं मध्यपाषाणकाल से संबंधित अनेकों चित्रित शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं। यह देश की शैल चित्रकारी का सबसे बड़ा खज़ाना है।

(ix) **चौंतरा (32°N–76°44'E)**- एक पुरापाषाणकालीन स्थल है, जो सोहन संस्कृति से संबंधित है, यह हिमाचल प्रदेश के मंडी ज़िले के अंतर्गत आता है। यहाँ से पुरापाषाणकालीन औज़ार प्राप्त हुए हैं। इन औज़ारों में कुछ हस्तकुठार व क्लीवर बहुत बढ़िया ढंग से तैयार किये गए हैं। ये औज़ार पश्चिमी यूरोप के परवर्ती रिस काल के ऐशूली रूपों से काफी मिलते-जुलते हैं।

(x) **सोहन घाटी (33°01'N–76°44'E)**- यह एक निम्न पुरापाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से कई ऐसे पत्थर के औज़ार प्राप्त हुए हैं जो निम्न पुरापाषाणकाल से संबंधित हैं। वर्तमान में यह पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित है। यहाँ चौपर-चैपिंग संस्कृति दिखाई पड़ती है। सोहन घाटी सोहन पुरापाषाण संस्कृति से जुड़ी हुई है।

अध्याय
2

मध्यपाषाण काल
(Mesolithic Age)

मैप-2.1

(i) **संभलपुर (21º47'N–83º97'E)**- उड़ीसा राज्य के मध्य में स्थित संभलपुर स्वयं एक ज़िला है जो मध्यपाषाणकालीन स्थलों के प्रमाण से भरा हुआ है। यहाँ से प्राकृतिक शैलाश्रय और उसमें खुदे हुए रेखाचित्र प्राप्त हुए हैं।

(ii) **सुंदरगढ़ (22º12'N–84º03'E)**- यह उड़ीसा का एक शहर है। यह एक प्रमुख मध्यपाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से मानव के द्वारा प्रयुक्त औज़ार और मानव निवास के साक्ष्य मिले हैं।

(iii) **आदमगढ़ (22º43'N–83º97'E)**- मध्य प्रदेश राज्य के होशंगाबाद ज़िले में स्थित है। बागोर की तरह यहाँ से भी पशुपालन के आरंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यह एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है। आदमगढ़ पहाड़ियों पर चट्टानों के आवास तथा शैल चित्रकला के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

(iv) **लंघनाज (23º27'N–72º29'E)**- लंघनाज गुजरात के मेहसाना ज़िले में स्थित है। लंघनाज से मध्यपाषाणकालीन जंगली जानवरों की हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं। ऐतिहासिक पिंपलेश्वर महादेव मंदिर यहाँ से मात्र चार किलोमीटर की दूरी पर है। लंघनाज में पाई गई जंगली जानवरों की हड्डियों से प्रमाण मिला है कि इस क्षेत्र में सवाना घास तथा वन की उपस्थिति थी। माइक्रोलिथ्स भी यहाँ से प्राप्त हुए हैं।

(v) **चंद्रावती (24º27'N–72º46'E)**- चंद्रावती दक्षिणी राजस्थान में गुजरात की सीमा पर स्थित है। यह एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से एक चर्ट पत्थर प्राप्त हुआ है जिस पर रेखाचित्र बना हुआ है।

(vi) **कोल्डिहवा (24º54'N–82º2'E)**- इलाहाबाद के दक्षिण-पश्चिम में मेजा तहसील के पास स्थित है। यहाँ 6000 ई. पू. में ही चावल उपजाया जाता था। कोल्डिहवा से डोरी छाप मृद्भांड पाए गए हैं। यहाँ से हस्तनिर्मित मृद्भांड तथा निवास के लिये झोपड़ियों के साक्ष्य मिले हैं। यह स्थल नवपाषाणिक चरण की प्राथमिक कृषि के लिये जाना जाता है।

(vii) **चोपानी मांडो (24º55'N–82º5'E)**- यह एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है जो इलाहाबाद के पास मेजा तालुके में स्थित है। यहाँ से हमें हस्तनिर्मित मृद्भांड प्राप्त हुए हैं तथा यहाँ से अनेक लघु पाषाण से निर्मित उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। यहाँ से नवपाषाणकालीन चरण की ओर संक्रमण के प्रमाण हैं, पत्थर युग की तीनों अवस्थाएँ यहाँ से खुदाई में प्राप्त हुई हैं।

(viii) **महादहा (25º29'N–82º11'E)**- यह स्थल उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ ज़िले में स्थित है। यह एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से हमें मानव के स्थायी निवास से संबंधित स्तंभ गर्त के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ से पशुओं के सींग से निर्मित एक कंठाहार पाया गया है जो मध्यपाषाणकालीन लोगों की कलाप्रियता को प्रदर्शित करता है। एक स्थान पर महादहा में पुरुष-स्त्री दोहरा शवाधान के साक्ष्य मिले हैं।

(ix) **बागोर (25º35'N–74º37'E)**- बागोर एक प्रमुख मध्यपाषाणकालीन स्थल है। बागोर राजस्थान के भीलवाड़ा ज़िले में स्थित है। यहाँ से पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसका समय 5000 ई.पू. हो सकता है। यह मध्यपाषाणकाल का सबसे बड़ा स्थल है तथा यहाँ से मध्यपाषाण संस्कृति की तीन अवस्थाएँ पाई जाती हैं।

(x) **सराय नाहर राय (25º97'N–81º10'E)**- यह एक मध्यपाषाणकालीन स्थल है। यह उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ ज़िले में स्थित है। यहाँ से स्तंभ गर्त के साक्ष्य मिले हैं जिससे पता चलता है कि यहाँ के लोग स्थायी रूप से निर्मित आवासों में निवास करते थे। यहाँ से कुछ सूक्ष्म पाषाण औज़ार तथा ज्यामितीय उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। शवों को आवासीय क्षेत्र में ही दफनाने के साक्ष्य हैं तथा शवों के साथ माइक्रोलिथ्स भी दफनाए जाते थे।

अध्याय
3

नवपाषाण काल (Neolithic Age)

मैप-3.1

(i) **कुचाई (21º59'N–86º42'E)**- कुचाई ओडिशा राज्य के मयूरभंज ज़िले में स्थित है। कुचाई का उत्खनन तो किया गया है किंतु इसकी तिथि निर्धारित नहीं हो सकी है। कुचाई को विद्वान स्पष्टत: नवपाषाणयुगीन स्थल ही मानते हैं। यहाँ से प्राप्त नवपाषाणिक चरण की वस्तुओं में मूठधारी कुल्हाड़ियाँ, शल्क, फरसा, हस्तनिर्मित मृद्‌भांड प्रमुख हैं।

(ii) **बरूडीह (22º89'N–86º31'E)**- बरूडीह पूर्वी भारत में स्थित तक नवपाषाणकालीन स्थल है। यह झारखंड राज्य के सिंहभूमि ज़िले में स्थित है। यह जमशेदपुर के दक्षिण पश्चिम में 30 किमी. दूरी पर स्थित सोनानदी और संजय नाला के संगम पर है। यहाँ से अनेक नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।

(iii) **मेहरगढ़ (29º23'N–67º37'E)**- पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में बोलन दर्रे के निकट है। यह वर्तमान में क्वेटा, कलात और सिबि नगरों के मध्य स्थित है। यहाँ से 7000-6000 ई.पू. के कृषि एवं पशुपालन के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। इसी समय से भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाणकाल की शुरुआत मानी जाती है। यह भारत में सर्वप्रथम गेहूँ व जौ की खेती का स्थल है। साथ ही, यहाँ मानव के साथ बकरी दफनाए जाने का साक्ष्य मिला है।

(iv) **किली गुल मुहम्मद (30º14'N–66º59'E)**- यह स्थल वर्तमान में पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत के क्वेटा घाटी में स्थित है। यहाँ के उत्खनन से संस्कृति के चार चरण प्रकाश में आए हैं। प्रथम चरण 8000 ई.पू. के लगभग का है, जब लोग कच्ची ईंटों के मकान में रहते थे। जबकि अंतिम चतुर्थ चरण में मिट्टी के ईंटों तथा पत्थरों से निर्मित मकानों के अवशेष मिले हैं।

(v) **राणा घुंडई (30º73'N–68º59'E)**- वर्तमान में यह स्थल पाकिस्तान के उत्तरी बलूचिस्तान प्रांत लोरालाई घाटी में स्थित है। यहाँ के उत्खननों से संस्कृति के पाँच स्तरों का पता चला है। सामान्यत: इसे सिंधु सभ्यता के काल का स्थल माना जाता है किंतु इसकी जड़ें नवपाषाणकालीन चरण से भी जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। यहाँ से प्राप्त उत्कृष्ट मृद्‌भांडों पर काले कूबड़ वाले बैलों को चित्रित किया गया है।

(vi) **गुमला (≅ 31º42'N–70º59'E)**- गुमला पाकिस्तान में डेरा इस्माइल खाँ के नज़दीक उत्तर पश्चिम में गोमल नदी घाटी में स्थित है। यहाँ से हमें हड़प्पा काल के आरंभ के समय की संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ के उत्खनन से हमें नवपाषाणकाल एवं ताम्रपाषाणकाल के विकास के चरण प्राप्त हुए हैं। इस स्थल से सींग वाले देवता की आकृति के चित्रण वाले काले एवं लाल रंग के मृद्‌भांड प्राप्त हुए हैं।

(vii) **रहमान ढेरी (31º57'N–70º47'E)**- रहमान ढेरी पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में डेरा इस्माइल खान के पास स्थित है। यह मुख्यत: हड़प्पा सभ्यता से संबंधित स्थल है किंतु इसकी जड़ नवपाषाणकाल तक जाती है। यहाँ लगभग 4000 ई.पू. में ही नगरीकरण प्रारंभ हो गया था। यहाँ से प्राप्त फीरोजा तथा नीलम के मनकों से मध्य एशिया के साथ संबंधों का पता चलता है।

(viii) **सरायखोला (33º43'N–72º47'E)**- सरायखोला वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। यह तक्षशिला संग्रहालय से मात्र 4 किमी. दक्षिण-पश्चिम में है। इसकी खोज 1960 में की गई। यहाँ से पाकिस्तान में प्रारंभिक कृषि समुदायों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

(ix) **गुफकराल (≅ 33º90'N–75ºE)**- गुफकराल भी जम्मू-कश्मीर में स्थित एक नवपाषाणकालीन स्थल है जो श्रीनगर से 41 किमी दूर दक्षिण-पूर्व दिशा में पुलवामा ज़िले के त्राल कस्बे के निकट स्थित है। यहाँ के लोग कृषि और पशुपालन दोनों कार्य करते थे। कश्मीर के नवपाषाणकालीन लोग पत्थर के पॉलिशदार औज़ारों के साथ हड्डी के उपकरणों का भी प्रयोग करते थे।

(x) **बुर्जहोम (34º10'N–73º54'E)**- जम्मू-कश्मीर में स्थित एक नवपाषाणकालीन स्थल है। यह श्रीनगर से 16 किमी उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। यहाँ से गर्तावास और कब्रों में मानव के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ के गोलाकार तथा अंडाकार गर्तावास ठंड से बचने के लिये होते थे; यहाँ से हमें हड्डियों के बने हुए तीर, सुइयाँ व दरातियाँ प्राप्त हुई हैं।

अध्याय
4

हड़प्पा सभ्यता
(Harappa Civilization)

मैप-4.1

(i) **पादरी (21º20'N–72º06'E)**- गुजरात राज्य के भावनगर ज़िले में स्थित पादरी एक हड़प्पाकालीन स्थल है। इस स्थल में हमें प्रारंभिक हड़प्पा काल से लेकर आरंभिक ऐतिहासिक काल तक के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। यहाँ से हमें कच्ची ईंटों के बने 9 कमरे तथा एक सार्वजनिक गोदाम के साक्ष्य मिले हैं। यह केरल-नो-ढोरो (Kerala-no-Dhoro) के नाम से भी जानी जाती है।

(ii) **भगत्राव (21º33'N–72º45'E)**- गुजरात राज्य के भड़ौच ज़िले में स्थित है। यह किम नदी के मुहाने पर स्थित लोथल के समान ही एक बंदरगाह नगर था। यह परवर्ती हड़प्पा सभ्यता का प्रमुख स्थल है, यह स्थल नर्मदा ताप्ती घाटी में प्रवेश का आसान द्वार है, इसका उत्खनन धौलावीरा के साथ किया गया है।

(iii) **लोथल (22º31'N–72º14'E)**- गुजरात राज्य के अहमदाबाद ज़िले में खंभात की खाड़ी के उत्तर में स्थित है। यहाँ से एक विशाल गोदी बाड़ा प्राप्त हुआ है जिसका प्रयोग बंदरगाहों में सामान लादने एवं उतारने में किया जाता था। यहाँ के लोग 1800 ई.पू. में ही चावल उपजाते थे और हाथी पालते थे। यहाँ मिले अवशेष इसे एक औद्योगिक शहर प्रमाणित करते हैं।

(iv) **सुरकोटदा (23º37'N–70º50'E)**- गुजरात राज्य के कच्छ क्षेत्र में स्थित एक प्रमुख हड़प्पाकालीन नगरीय स्थल था। इस समुद्रतटीय नगर से हड़प्पा सभ्यता के उन्नत स्वरूप ज्ञात होता है। यहाँ से घोड़े की हड्डियाँ पाई गई हैं। सामुद्रिक व्यापार में यह स्थल अहम भूमिका निभाता था। यहाँ के घरों में स्नानागार एवं समुचित जल निकासी की व्यवस्था थी। यहाँ से विशिष्ट प्रकार की हड़प्पाई मुहर मिली है।

(v) **धौलावीरा (23º53'N–70º13'E)**- यह स्थल गुजरात के कच्छ क्षेत्र में स्थित है। इस स्थल की सबसे प्रमुख विशेषता इसका त्रि-स्तरीय विभाजन था। अन्य हड़प्पाई नगरों से अलग यहाँ दुर्ग नगर, मध्यम नगर तथा निचले स्तर पर नगर पाए गए हैं। यहाँ से 16 जलाशय भी मिले हैं तथा यहाँ की महत्त्वपूर्ण विशेषता जल प्रबंधन व्यवस्था है। धौलावीरा उत्खनन से प्राप्त पॉलिशदार श्वेत पाषाण खंड भी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

(vi) **सुत्कांगेडोर (25º29'N–61º57'E)**- यह पाकिस्तान और ईरान की सीमा पर दास्क नदी के पूर्वी तट पर स्थित एक हड़प्पाकालीन बंदरगाह नगर था। यह एक प्राकृतिक चट्टान पर अवस्थित था। यह हड़प्पा सभ्यता का सर्वाधिक पश्चिमी नगर है, यह पूर्णरूप से व्यापारिक गतिविधि का नगर था तथा कृषि कार्यों की अनुपस्थिति थी।

(vii) **मोहनजोदड़ो (27º19'N–68º08'E)**- हड़प्पा से 483 किलोमीटर दूर पाकिस्तान के लरकाना ज़िले में सिंध प्रांत में स्थित है। यह हड़प्पा सभ्यता का एक विकसित नगरीय स्थल था। यहाँ दुर्ग क्षेत्र में पाया गया स्नानागार बहुत प्रसिद्ध है। खुदाइयों से यहाँ एक उन्नत नागरिक जीवन का पता चलता है तथा सुंदर नगर प्रणाली देखने को मिलती है।

(viii) **हड़प्पा (30º37'N–72º51'E)**- पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के किनारे स्थित है। यह हड़प्पा सभ्यता का एक महत्त्वपूर्ण नगर था। हड़प्पा नगर के नाम पर ही इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता कहा गया, क्योंकि सर्वप्रथम इसी स्थल पर सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए थे। यहाँ पाए गए भवनों, दीवारों, नालियों, धान्य कोठारों से उन्नत नगर जीवन का प्रमाण मिलता है।

(ix) **मांडा (32º56'N–74º48'E)**- जम्मू में अखनूर सेक्टर के पास स्थित है। यहाँ से हड़प्पा संस्कृति के अवशेष प्राप्त किये गए हैं। यह स्थल उत्तर में हड़प्पा सभ्यता के विस्तार की सीमा निर्धारित करता है। यहाँ से उत्तर-हड़प्पा संस्कृति के अवशेष भी मिले हैं।

(x) **शोर्तुघई (37º19'N–69º31'E)**- अफगानिस्तान में तखर प्रांत में आक्सस नदी के तट पर स्थापित एक व्यापारिक स्थल। वस्तुत: यह हड़प्पा के निवासियों के द्वारा स्थापित एक उपनिवेश था जिसके माध्यम से वे मध्य एशिया से व्यापार करते थे। यहाँ से हड़प्पा जैसे चित्रित मृद्भांड तथा संक्षिप्त लेख वाली मुहर मिली है, इसके निकट ही लैपिस लाजुली की खान स्थित थी।

अध्याय
5

ताम्रपाषाण काल (Chalcolithic Age)

मैप-5.1

(i) **इनामगाँव (18°36'N–74°32'E)**- इनामगाँव भी महाराष्ट्र के पुणे के पूर्व में लगभग 90 किमी. दूरी पर स्थित है। यह एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल है। इनामगाँव की बस्ती किलाबंद एवं खाइयों से घिरी हुई थी। यहाँ चूल्हों सहित बड़े-बड़े कच्ची मिट्टी के मकान तथा गोलाकार गड्ढों वाले मकान मिले हैं। अनाज के रूप में राजस्व लेने के लिये कोठार की व्यवस्था थी।

(ii) **चंदोली (19°05'N–73°98'E)**- महाराष्ट्र के पुणे के नज़दीक उत्तर की ओर भीमा नदी की सहायक घोड़ नदी पर स्थित है। यह एक प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन स्थल है यहाँ से तांबे की एक छेनी प्राप्त हुई है।

(iii) **दैमाबाद (19°31'N–74°42'E)**- महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले में परवरा नदी के बाएँ किनारे स्थित एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल है। यहाँ के लोग कृषि कार्य के साथ-साथ पशुपालन भी करते थे। गाय, भैंस, बकरी, भेड़ एवं सूअर के अवशेष मिले हैं। यहाँ से टोंटी वाले पात्र एवं गोड़ीदार तश्तरियाँ और कटोरे मिले हैं। यहाँ से सवाल्दा, उत्तर-हड़प्पा, मालवा संस्कृति के प्रमाण मिले हैं।

(iv) **जोर्वे (19°54'N–74°27'E)**- जोर्वे भी महाराष्ट्र के अहमदनगर ज़िले में स्थित है। यह एक प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन स्थल है जो जोर्वे मृद्भांडों (लाल रंग से रँगे पात्र जिन पर काले रंग से चित्रकारी की जाती थी) के लिये जाना जाता है। यहाँ से चूल्हे, आयताकार मकान, तांबे के उपकरण आदि के साक्ष्य मिले हैं।

(v) **प्रकाश (21°30'N–74°21'E)**- महाराष्ट्र के धुलिया ज़िले में स्थित एक ताम्रपाषाणकालीन स्थल है। प्रकाश भी जोर्वे संस्कृति से जुड़ा एक स्थल था। यहाँ से नवपाषाणकाल से लेकर ऐतिहासिक काल तक के साक्ष्य मिले हैं। इस स्थल पर सर्वप्रथम मालवा संस्कृति का आगमन हुआ था उसके बाद जोर्वे ने इसका स्थान लिया।

(vi) **नवदाटोली (22°11'N–75°35'E)**- नवदाटोली एक प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन स्थल है जो मध्य प्रदेश के खरगौन ज़िले में माहेश्वर के नज़दीक स्थित है। यहाँ से मसूर, उड़द, मूंग, मटर, बेर और अलसी प्राप्त हुआ है। इतने सारे अनाज भारत में अन्य किसी जगह पर नहीं पाए गए। नवदाटोली से निम्न पुरापाषाणकाल से लेकर ताम्रपाषाणकाल तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहाँ के लोग आयताकार मकानों में रहते थे तथा तांबे एवं सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का प्रयोग करते थे।

(vii) **कायथा (23°23'N–76°01'E)**- कायथा मध्य प्रदेश के उज्जैन ज़िले में स्थित है। कायथा में ताम्रपाषाणकाल संस्कृति के तीन चरण प्राप्त हुए हैं। यह मालवा संस्कृति (ताम्रपाषाणकालीन) का प्रमुख स्थल था। यहाँ से उत्कृष्ट मालवा मृद्भांड पाया गया है। पहले चरण में बैंगनी रंग का चित्रित मृद्भांड, दूसरे में काला एवं लाल तथा तीसरे में मालवा संस्कृति के समान मृदभांड पाए गए हैं।

(viii) **पांडुराजारढीबी (25°0'N–74°25'E)**- पांडुराजारढीबी एक प्रमुख ताम्रपाषाणकालीन स्थल है जो पश्चिम बंगाल के वर्द्धमान ज़िले में स्थित है। यहाँ से हमें चावल एवं मछली के काँटे प्राप्त हुए हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग मछली के साथ चावल खाते थे। यहाँ पर ताम्रपाषाण के साथ लौह युग के भी कुछ प्रमाण मिले हैं।

अध्याय
6

महापाषाण काल
(Megalithic Age)

मैप-6.1

(i) **आदिचन्नलूर (8º73'N–77º7'E)**– आदिचन्नलूर एक महापाषाणकालीन स्थल है जो तमिलनाडु के तिरूनेलवेली ज़िले में स्थित है। यहाँ से 50 से भी ज़्यादा पके हुए मिट्टी के पात्र और लोहे के औज़ार प्राप्त हुए हैं। महाराष्ट्र के जूनापानी से लेकर आडिचन्नालूर तक महापाषाणकालीन लोगों का सुव्यवस्थित विकास देखा गया।

(ii) **जदिगेनहल्ली (13º05'N–77º85'E)**– जदिगेनहल्ली कर्नाटक राज्य में स्थित एक महापाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से हमें महापाषाणकालीन लोगों के द्वारा प्रयुक्त लाल-काले मृद्भांड तथा लोहे के औज़ार मिले हैं। कुछ शहरी वस्तुएँ भी मिली हैं, जिससे ज्ञात होता है कि यहाँ के लोग व्यापार भी करते थे।

(iii) **नागार्जुनकोंडा (16º52'N–79º24'E)**– नागार्जुनकोंडा आंध्र प्रदेश के गुंटूर ज़िले में स्थित है। यह एक विख्यात बौद्ध स्थल है, किंतु यहाँ से हमें महापाषाणकालीन लोगों के निवास के साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं। इस स्थान का यह नाम एक बौद्ध भिक्षु नागार्जुन के नाम पर पड़ा। यहाँ से स्तूप, विहार, चैत्यों के प्रमाण पाए गए हैं।

(iv) **येल्लेश्वरम (17º05'N–79º27'E)**– येल्लेश्वरम तेलंगाना के नलगोंडा ज़िले में स्थित एक महापाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से उत्खनन में चार प्रकार की कब्रें मिली हैं। महापाषाणकालीन काले-लाल पात्र लोहे के औज़ारों के साथ मिले हैं।

(v) **रायगीर (17º53'N–78º94'E)**– रायगीर एक महापाषाणकालीन स्थल है जो तेलंगाना में गोदावरी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यहाँ से हमें जो महापाषाणकालीन कब्रें मिली हैं वे मेनहिर टाइप की हैं।

(vi) **जनमपेट (18º09'N–80º68'E)**– जनमपेट एक महापाषाणकालीन स्थल है जो तेलंगाना राज्य के खम्मम ज़िले में स्थित है। यहाँ से हमें महापाषाणकालीन लोगों से संबंधित कब्रें प्राप्त हुई हैं।

(vii) **जूनापानी (21º15'N–78º56'E)**– महाराष्ट्र के नागपुर ज़िले में स्थित एक महापाषाणकालीन स्थल है। जूनापानी से लगभग 300 पत्थरों से घिरी कब्रें पाई गई हैं। यहाँ से हमें घोड़ों के दफनाए जाने के साक्ष्य भी मिले हैं। इन पत्थरों के शवाधानों में कुछ कप के आकार के पत्थर मिले हैं जो खगोलीय महत्त्व के प्रतीत होते हैं।

(viii) **बेलन घाटी (24º83'N–82º23'E)**– बेलन घाटी मिर्ज़ापुर ज़िले में स्थित है जो उत्तर प्रदेश में है। यहाँ से हमें महापाषाणकालीन स्थल भी मिले हैं। ज्ञातव्य है कि बेलन घाटी में पुरापाषाणकालीन स्थल भी पाए गए हैं।

(ix) **कराची (24º86'N–67ºE)**– कराची पाकिस्तान के दक्षिण में स्थित एक बंदरगाह नगर है। भारत के बाहर यहाँ से अनेक महापाषाणकालीन स्थल मिले हैं। कराची में बड़ी संख्या में महापाषाणकालीन कब्रें अरब प्रायद्वीप में महापाषाणकालीन सक्रियता को दर्शाती हैं।

(x) **बांदा (25º47'N–80º33'E)**– बांदा उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित है। यह एक महापाषाणकालीन स्थल है। इस स्थान से अनेक महापाषाणकालीन स्थल मिले हैं। इस स्थान से अनेक महापाषाणीय कब्रें प्राप्त हुई हैं। इसके अतिरिक्त हमें अनेक औज़ार एवं मृद्भांड भी मिले हैं।

(xi) **मणिपुर [(23º83'N से 25º68'N) और (93º03'E से 94º78'E) के बीच]** – मणिपुर भारत के पूर्वोत्तर में स्थित एक राज्य है। मणिपुर के कई स्थलों से महापाषाणकालीन स्मारक (Monuments) पाए गए हैं। विशेषकर मणिपुर से हमें मेनहिर कब्रें मिली हैं जिनका निर्माण शव को दफनाने के बाद उसके चारों ओर पत्थर खड़े करके किया जाता था।

(xii) **देवसा (≅ 26º9'N–75º8'E)**– देवसा राजस्थान के जयपुर ज़िले में स्थित है। यह एक महापाषाणकालीन स्थल है। यहाँ से महापाषाणकालीन भांडों के अतिरिक्त काले-लाल भांड भी पाए गए हैं। कुछ गुलाबी क्वार्ट्ज़ाइट पत्थर के ऐशूलियन हस्तकुठार भी यहाँ से पाए गए हैं।

* बुर्जहोम और गुफकराल से भी महापाषाणकालीन साक्ष्य मिले हैं। ये दोनों स्थल जम्मू-कश्मीर में स्थित हैं। इनके स्पाटिंग प्लेस के लिये नवपाषाणकालीन मैप में देखें।

अध्याय
7

वैदिक काल
(Vedic Period)

मैप-7.1

(i) **किष्किंधा (15º45'N–76º52'E)**- किष्किंधा एक उत्तरवैदिककालीन स्थल है। रामायण में इसे बालि एवं सुग्रीव के राज्य के रूप में बताया जाता है। यह कर्नाटक राज्य में काप्पल ज़िले में हंपी के नज़दीक स्थित है। भौगोलिक रूप से यह क्षेत्र दंडकारण्य के अंतर्गत आता है। यहाँ के वनक्षेत्र को दंडकारण्य कहा गया है।

(ii) **पंचवटी (20ºN–73º79'E)**- महाराष्ट्र के नासिक ज़िले में स्थित है। यह एक उत्तरवैदिककालीन स्थल के रूप में माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार रावण के द्वारा सीता जी का अपहरण इसी पंचवटी नामक स्थल से किया गया था। आज भी यहाँ सीता गुफा के साथ कई मंदिर पाए जाते हैं।

(iii) **प्रयाग (25º43'N–81º84'E)**- प्रयाग एक ऐतिहासिक स्थल है जो इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) ज़िले में स्थित है। इसे देवभूमि भी कहा जाता है। प्रयाग का अर्थ बलिदान स्थल (Place of Sacrifice) है। ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मा जी ने संसार की रचना के बाद अपनी प्रथम बलि प्रयाग में ही दी।

(iv) **कौशांबी (25º50'N–81º42'E)**- कौशांबी स्वयं उत्तर प्रदेश राज्य का एक ज़िला है। यह इलाहाबाद के पश्चिम में 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ से उत्तर वैदिककालीन बस्ती के साक्ष्य मिलते हैं। आगे यह वत्स महाजनपद की राजधानी बना। बुद्ध के समय यहाँ का शासक उदयन था। यहाँ से मटमैले रंग का बर्तन प्राप्त हुआ है। यहाँ से उत्खनन में कई प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले हैं जिन्हें चित्रित-धूसर मांड, उत्तरी काले चमकीले मांड आदि नामों से भी जाना जाता है।

(v) **अहिच्छत्र (28º37'N–79º13'E)**- अहिच्छत्र उत्तर प्रदेश के बरेली ज़िले में स्थित है। यह उत्तर वैदिक काल के पांचालों की राजधानी थी। यहाँ से हमें चित्रित धूसर मृद्भांड तथा बाद के काल के कुषाण शासकों के सिक्के मिले हैं। अहिच्छत्र प्राचीन काल में उत्तर भारत के व्यापारिक मार्ग का महत्त्वपूर्ण स्थल था, जो तक्षशिला एवं पाटलिपुत्र को जोड़ने वाले मार्ग पर स्थित था।

(vi) **इंद्रप्रस्थ (28º61'N–77º25'E)**- इंद्रप्रस्थ वर्तमान में दिल्ली के पुराना किला के क्षेत्र में स्थित है। इस स्थल को महाभारत काल के कुरु राज्य की राजधानी के रूप में माना जाता है। यहाँ से उत्तरवैदिककालीन संस्कृति के साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

(vii) **मेरठ (28º99'N–77º7'E)**- मेरठ उत्तर प्रदेश का एक ज़िला है। यहाँ प्रारंभिक आर्यों का निवास स्थल था। यहाँ से चित्रित धूसर मृद्भांड के साथ-साथ उत्तर हड़प्पाकालीन मृद्भांड भी पाए गए हैं। यहीं से अशोक का स्तंभ फिरोजशाह तुगलक दिल्ली ले गया था।

(viii) **हस्तिनापुर (29º17'N–78º02'E)**- हस्तिनापुर उत्तर प्रदेश के मेरठ ज़िले में स्थित है। यह स्थल कुरु वंश की राजधानी के रूप में जाना जाता है। यहाँ से गेरुवर्णी मृद्भांड के साथ चित्रित धूसर मृद्भांड भी पाए गए हैं। इस स्थल से लोहे के अस्त्र-शस्त्र मिले हैं।

(ix) **कुरुक्षेत्र (29º96'N–76º83'E)**- कुरुक्षेत्र हरियाणा का एक ज़िला है। कुरुक्षेत्र इतिहास में महाभारत के युद्धस्थल के रूप में जाना जाता है। माना जाता है कि महाभारत का युद्ध कौरवों एवं पांडवों के बीच 900 ई.पू. के आस-पास लड़ा गया था। यहाँ से एक स्तूप भी प्राप्त हुआ है।

(x) **भगवानपुरा (30º04'N–76º57'E)**- भगवानपुरा हरियाणा के कुरुक्षेत्र ज़िले में स्थित है। यहाँ से 13 कमरों वाला एक घर प्राप्त हुआ है। इस स्थल से चित्रित धूसर मृद्भांड एवं पशुओं की हड्डियाँ मिली हैं। इसका काल 1600-1000 ई. पू. माना गया जो ऋग्वेद का काल था। यहाँ के उत्खनन से परवर्ती हड़प्पा काल के अवशेषों के साथ ही चित्रित धूसर मृद्भांड प्राप्त हुए हैं।

(xi) **तक्षशिला (33º44'N–72º47'E)**- तक्षशिला वर्तमान में पाकिस्तान के रावलपिंडी ज़िले में स्थित है। इसका संबंध वैदिक काल से है। ऐसा माना जाता है कि महाभारत का पाठ सर्वप्रथम तक्षशिला में ही वेदव्यास के पिता वैशम्पायन द्वारा किया गया। 2006 में तक्षशिला को यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

अध्याय
8

महाजनपद काल (Mahajanpada Age)

मैप-8.1

(i) **अश्मक [(≅ 17°N से 18°N) और (77°E से 81°E) के बीच]**- विंध्य के दक्षिण में स्थित एकमात्र महाजनपद अश्मक ही था। यह गोदावरी नदी के उत्तर में स्थित था। इसकी राजधानी पोटल या पोटलि थी। बौद्ध साहित्य के अनुसार अश्मक का संबंध अवंति से था। महाभारत तथा वायुपुराण में अश्मक नामक राजा का वर्णन मिलता है।

(ii) **भड़ौच (21°70'N–72°99'E)**- यूनानी ग्रंथों में इसे बेरीगाजा के नाम से वर्णित किया गया है। वर्तमान में यह गुजरात राज्य के भरूच नामक ज़िले में स्थित था। यह महाजनपदकाल से लेकर आगे के काल तक पश्चिमी तट का प्रमुख बंदरगाह बना रहा।

(iii) **कुंडग्राम (25°68'N–85°21'E)**- कुंडग्राम बिहार के वैशाली ज़िले में स्थित है। यहाँ जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म हुआ था।

(iv) **मथुरा (27°29'N–77°40'E)**- मथुरा वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य का एक ज़िला है। मथुरा श्री कृष्ण की जन्मस्थली के नाम से विख्यात है। ईसा पूर्व छठी सदी में यह शूरसेन महाजनपद की राजधानी थी। मथुरा कनिष्क की दूसरी राजधानी भी थी, कुषाणों के अधीन मथुरा कला एवं संस्कृति के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

(v) **मत्स्य (27°45'N–76°18'E)**- मत्स्य महाजनपद छठी सदी ईसा पूर्व का एक प्रमुख महाजनपद था। इसकी राजधानी विराटनगर थी। विराटनगर आधुनिक राजस्थान के जयपुर ज़िले में अवस्थित था। साहित्यिक स्रोतों में अपर मत्स्य, वीरमत्स्य आदि के जो उल्लेख आए हैं वे संभवत: मूल राज्य की शाखाएँ हैं। मत्स्य प्रदेश कभी चेदि जनपद के अधीन था।

(vi) **लुंबिनी (27°67'N–83°50'E)**- लुंबिनी वर्तमान में नेपाल के रुम्मिनदेई ज़िले में स्थित है। यह स्थल महात्मा बुद्ध के जन्मस्थल के रूप में जाना जाता है। सम्राट अशोक ने इस स्थल की यात्रा की थी तथा इसका भूमिकर घटा दिया था। अश्वघोष ने 'बुद्धचरित' में लुंबिनी का उल्लेख बुद्ध के जन्मस्थल के रूप में किया है।

(vii) **शूरसेन (≅ 28°27'N–76.5°77.5'E)**- मथुरा के उत्तर-पश्चिम में स्थित था। मथुरा ही इस शूरसेन की राजधानी थी। शूरसेन का शासक अवंतिपुत्र था जो महात्मा बुद्ध का शिष्य था। पाणिनी के समय में अंधक एवं वृष्णिजन का वासस्थान मथुरा में ही था।

(viii) **सियालकोट (32°29'N–74°31'E)**- सियालकोट पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित एक ज़िला है। इंडो-ग्रीक शासक मिनांडर की राजधानी साकल इसी सियालकोट में स्थित थी। बाद में साकल हूण शासक मिहिरकुल की राजधानी बना।

(ix) **गांधार (33°44'N–72°47'E)**- गांधार जनपद वर्तमान काबुल, पेशावर एवं रावलपिंडी ज़िलों के बीच में अवस्थित था। तक्षशिला इसकी राजधानी थी। छठी सदी ईसा पूर्व में यहाँ पुष्कर सारिन नामक राजा राज्य कर रहा था। यह 16 महाजनपदों में से एक था, फारस ने छठी सदी ईसा पूर्व में इसे जीत लिया।

(x) **कंबोज**- कंबोज जनपद वर्तमान अफगानिस्तान के उत्तर-पूर्व में स्थित था। यह हिंदुकुश के दक्षिण-पूर्व में स्थित था। मौर्यकालीन बेगराम एवं लमघान अभिलेख इसी के नज़दीक पाए गए हैं। राजपुर कंबोज की राजधानी थी। कंबोज में पहले तो शासन की बागडोर राजा के हाथ में होती थी परंतु कौटिल्य के समय यह एक संघ राज्य बन गया था।

अध्याय
9

मौर्य काल
(Maurya Period)

मैप-9.1

(i) **येर्रगुड्डी (15º38'N–78º14'E)**– येर्रगुड्डी वर्तमान में आंध्र प्रदेश के कुर्नूल ज़िले की दक्षिणी सीमा पर स्थित गूटी से 8 मील की दूरी पर स्थित है। येर्रगुड्डी से अशोक के दीर्घ एवं लघु दोनों शिलालेख प्राप्त हुए हैं। येर्रगुड्डी के निकट ही राजुल मंडगिरि का लघु शिलालेख प्राप्त हुआ है।

(ii) **सोपारा (19º41'N–72º80'E)**– सोपारा एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था जो महाराष्ट्र के थाने ज़िले में स्थित था। यहाँ से अशोक का एक महत्त्वपूर्ण शिलालेख प्राप्त हुआ है। इसे सूर्पारक के नाम से भी जाना जाता है। सोपारा में मौर्य सम्राट अशोक द्वारा ईसा पूर्व तीसरी सदी में निर्मित स्तूप भी हैं। वर्तमान में यह स्तूप भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है।

(iii) **जौगड़ (19º51'N–84º82'E)**– जौगड़ ओडिशा के गंजाम ज़िले में स्थित है। यहाँ से अशोक का एक वृहद् शिलालेख मिला है। जौगड़ कलिंग राज्य का ही एक हिस्सा था। यहाँ से प्राप्त दोनों अभिलेख समापा के महामात्य को संबोधित हैं, शायद मौर्य काल में इसका नाम समापा रहा है।

(iv) **धौली (20º18'N–85º84'E)**– धौली ओडिशा राज्य के पुरी ज़िले में महानदी के मुहाने पर स्थित है। यहाँ से अशोक का वृहद् शिलालेख प्राप्त हुआ है, जिसमें अच्छे शासन से संबंधित सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है। यह स्थान प्रसिद्ध कलिंग युद्ध की भयावहता का साक्षी है, यहाँ एक 'शांति स्तूप' तथा विशाल मठ भी स्थित हैं।

(v) **गिरनार (21º51'N–70º55'E)**– गिरनार काठियावाड़ प्रायद्वीप में जूनागढ़ के समीप स्थित है। चंद्रगुप्त मौर्य के समय यहाँ सुदर्शन झील का निर्माण किया गया था जिसकी मरम्मत रुद्रदामन ने करवाई। इसकी जानकारी हमें गिरनार अभिलेख से मिलती है। यहाँ से अशोक का एक लघु शिलालेख भी प्राप्त हुआ है। जैन धर्मावलंबी इसे अपने 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ का जन्म स्थान भी मानते हैं।

(vi) **रूपनाथ (23º64'N–80º03'E)**– रूपनाथ एक मौर्यकालीन स्थल है जो मध्य प्रदेश के जबलपुर में स्थित है। यहाँ से अशोक का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है। यह संभवत: शैव धर्मानुयायियों का एक महत्त्वपूर्ण स्थल था क्योंकि यहाँ से एक शिवलिंग की प्राप्ति भी हुई है। इससे अनुमान लगाया जाता है कि संभवत: अशोक के प्रवास के समय यहाँ कोई शिव मंदिर रहा होगा। मौर्य काल में यह व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था।

(vii) **वैराट (27º45'N–76º18'E)**– राजस्थान में जयपुर के निकट स्थित है। वैराट पुरातात्त्विक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थल है। पुरातात्त्विक उत्खनन में मौर्यकालीन अवशेष प्राप्त किये गए हैं, जिनमें सर्वाधिक उल्लेखनीय अशोक का लघु शिलालेख एवं अशोक निर्मित बौद्ध मठ हैं। इस अभिलेख में अशोक बौद्ध, धम्म एवं संघ के प्रति आदर प्रकट करता है तथा उसका बौद्ध होना सुनिश्चित करता है। महाजनपद काल में वैराट विराटनगर के नाम से जाना जाता था तथा यह मत्स्य महाजनपद की राजधानी था।

(viii) **कलसी (30º51'N–77º84'E)**– कलसी उत्तराखंड के देहरादून जिले में स्थित है। यहाँ से अशोक का वृहद् शिलालेख प्राप्त हुआ है। यह उन नौ स्थानों में से एक है जहाँ से अशोक के 14 वृहद् शिलालेख प्राप्त हुए हैं। हाल के पुरातात्त्विक उत्खननों से यहाँ ईंटों से निर्मित यज्ञवेदियों के साक्ष्य पाए गए हैं।

अध्याय
10

मौर्योत्तर काल
(Post Mauryan Period)

मैप-10.1

(i) **उरैयूर (10º49'N–78º40'E)**- उरैयूर तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली ज़िले में स्थित है। संगम युग के दौरान प्रारंभिक चोलों ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। उरैयूर वस्त्र उद्योग के लिये प्रसिद्ध था। उरैयूर से रोमन सिक्कों एवं कुछ अन्य वस्तुओं की प्राप्ति से ऐसा अनुमान है कि इसके रोमन साम्राज्य से व्यापारिक संबंध थे। यह मोती उत्पादन केंद्र के रूप में भी प्रसिद्ध था।

(ii) **धान्यकटक (16º57'N–80º31'E)**- मौर्योत्तरकालीन प्रमुख स्थल है जो वर्तमान में धरनिकोटा (Dharanikota) नाम से आंध्र प्रदेश के गुंटूर ज़िले में अवस्थित है। अत्यधिक धान की पैदावार होने के कारण इसका नाम धान्यकटक पड़ा। यहाँ एक बड़ा बौद्ध स्तूप पाया गया है। ह्वेनसांग ने यहाँ का अच्छा-खासा विवरण लिख छोड़ा है।

(iii) **नानाघाट (19º30'N–73º67'E)**- नानाघाट सातवाहनकालीन एक प्रमुख स्थल था (पुणे ज़िले के पास)। यहाँ से सातवाहन शासक शातकर्णी प्रथम की रानी नागनिका का गुहालेख प्राप्त हुआ है। इस गुहालेख से ज्ञात होता है कि शातकर्णी ने अश्वमेध यज्ञ किया था।

(iv) **पलूरा (19º43'N–85º19'E)**- पलूरा मौर्योत्तर काल का एक प्रमुख बंदरगाह था। यह चिल्का झील के ठीक दक्षिण में स्थित था। वर्तमान में यह पलूर गाँव के नाम से जाना जाता है। ग्रीक भूगोलवेत्ता टॉलमी ने इसका उल्लेख किया है। यह दक्षिण-पूर्व एशिया की ओर जाने वाला एक अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह था।

(v) **सोपारा (19º47'N–72º8'E)**- मौर्यकालीन एवं मौर्योत्तरकालीन एक प्रमुख बंदरगाह था। यह वर्तमान में महाराष्ट्र के पालधर ज़िले में अवस्थित है। इसे सूपरिक के नाम से भी जाना जाता है। एक व्यापारिक मार्ग सोपारा को उज्जैन से जोड़ता था। टॉलमी के ऐतिहासिक ग्रंथ में सोपारा का वर्णन किया गया है।

(vi) **नासिक (20º00'N–73º78'E)**- यह महाराष्ट्र राज्य में स्थित एक ज़िला है जो गोदावरी नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। नासिक से गौतमी बलश्री का अभिलेख प्राप्त हुआ है। यह एक समृद्ध स्थल था क्योंकि भड़ौच को जाने वाला व्यापारिक मार्ग यहीं से होकर गुज़रता था।

(vii) **भड़ौच (21º72'N–72º99'E)**- भड़ौच पश्चिमी भारत में स्थित एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था। यह वर्तमान में गुजरात के भरूच ज़िले के अंतर्गत आता है। 'पेरीप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी' नामक पुस्तक के लेखक ने इसकी चर्चा की है। यहाँ से मोती, कीमती पत्थर, मसाले एवं मलमल पश्चिम में ग्रीस के शासकों को भेजे जाते थे।

(viii) **ताम्रलिप्ति (22º3'N–87º92'E)**- ताम्रलिप्ति को वर्तमान में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर ज़िले के ताम्रलुक के रूप में जाना जाता है। यह पूर्वी भारत में स्थित एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह था। यहाँ से चीन, इंडोनेशिया तथा श्रीलंका आदि से व्यापारिक आदान-प्रदान किया जाता था।

(ix) **बारबरीकम् (≅ 24º51'N–67º'E)**- बारबरीकम् मौर्योत्तर काल का एक प्रमुख बंदरगाह था जो वर्तमान के कराची (पाकिस्तान) के निकट स्थित था। यहाँ से वस्तुएँ पश्चिमी देशों को निर्यात की जाती थीं। यहाँ बैक्ट्रिया से चीनी फर एवं सिल्क आता था जिन्हें यहाँ से पश्चिमी देशों को भेज दिया जाता था।

अध्याय 11

गुप्त काल (Gupta Period)

मैप-11.1

(i) **कांचीपुरम (12º82'N–79º71'E)-** कांचीपुरम वर्तमान में तमिलनाडु राज्य का एक ज़िला है। गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने अपने दक्षिण भारत के अभियान के दौरान कांची के शासक विष्णुगोप को पराजित किया था। बाद में कांचीपुरम पल्लव शासकों की राजधानी रहा। कांचीपुरम हस्तनिर्मित रेशम तथा सूती वस्त्र के लिये विश्व प्रसिद्ध है।

(ii) **वल्लभी (21º89'N–71º88'E)-** वल्लभी में मैत्रक वंश के शासकों का शासन था। वर्तमान में वल्लभी गुजरात के भावनगर ज़िले में स्थित है। 512 ई. में देवर्धि क्षमाश्रमण के नेतृत्व में यहाँ द्वितीय जैन संगीति का आयोजन किया गया था जिसमें जैन ग्रंथों को अंतिम रूप प्रदान किया गया।

(iii) **बाघ (22º20'N–74º49'E)-** बाघ मध्य प्रदेश के धार ज़िले में स्थित है। बाघ की गुफाएँ गुप्तकालीन हैं जो अपने भित्ति चित्रों के लिये इतिहास में प्रसिद्ध हैं। बाघ की गुफाओं के भित्ति चित्र बौद्ध धर्म से प्रभावित हैं। बाघ में कुल नौ गुफाएँ हैं। चौथी गुफा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, जिसे रंगमहल के नाम से जाना जाता है। इस गुफा की दीवारों पर जातक कथाओं की चित्रकारी की गई है।

(iv) **उज्जैन (23º17'N–75º79'E)-** जब चंद्रगुप्त द्वितीय ने शकों को पराजित कर पश्चिम भारत पर अपना अधिकार कर लिया तो उसने उज्जैन को अपनी द्वितीय राजधानी बनाया। उज्जैन मध्य प्रदेश राज्य का एक ज़िला है। महाकालेश्वर मंदिर उज्जैन में ही है। कालिदास ने मेघदूतम् में महाकालेश्वर मंदिर का उल्लेख किया है।

(v) **मंदसौर (24º03'N–75º08'E)-** मध्य प्रदेश राज्य का एक ज़िला है जो गुप्त काल में काफी प्रसिद्ध था। मालवा का शासक यशोधर्मन, जिसने हूणों को पराजित किया था, इसी मंदसौर से संबंधित था। मंदसौर अभिलेख से ज्ञात होता है कि रेशम बुनकरों की एक श्रेणी ने यहाँ सूर्य मंदिर बनवाया था।

(vi) **एरण (24º09'N–78º16'E)-** एरण गुप्तकालीन स्थल है। यह वर्तमान में मध्य प्रदेश के सागर ज़िले में स्थित है। यहाँ से 510 ई. का भानुगुप्त का एरण अभिलेख मिला है जिसमें किसी गोपराज नामक सामंत की पत्नी के सती होने का उल्लेख है। यह भारत में सती प्रथा का प्रथम उल्लेख है।

(vii) **गया (24º75'N–85º01'E)-** गया बिहार राज्य में गंगा के दक्षिण में स्थित एक ज़िला है। समुद्रगुप्त के समय श्रीलंका के राजा मेघवर्ण ने गया में बौद्ध मंदिर बनवाने का आग्रह किया था जिसे समुद्रगुप्त ने स्वीकार कर लिया था। आगे यह बौद्ध मंदिर एक विशाल विहार में परिवर्तित हो गया।

(viii) **नालंदा (25º08'N–85º26'E)-** वर्तमान में बिहार राज्य के बिहार शरीफ ज़िले में स्थित एक नगर है। गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम ने यहाँ एक विश्वविद्यालय का निर्माण कराया जहाँ देश-विदेश से हज़ारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिये आते थे। वर्तमान में भारत सरकार और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश मिलकर नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना कर रहे हैं। अमर्त्य सेन को इस विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया है।

(ix) **इलाहाबाद (25º27'N–81º51'E)-** इलाहाबाद जो प्रयाग के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर प्रदेश राज्य का एक ज़िला है। गुप्त शासक समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति की रचना यहीं पर स्थित अशोक के स्तंभ में की गई। आगे इसी स्तंभ पर जहाँगीर ने भी अपना अभिलेख खुदवाया।

(x) **पद्मावती (25º77'N–78º25'E)-** पद्मावती वर्तमान में मध्य प्रदेश राज्य के ग्वालियर ज़िले में स्थित है। गुप्त काल के समकालीन यहाँ नाग राजाओं का शासन था। चंद्रगुप्त द्वितीय ने नाग राजकुमारी कुवेरनागा से विवाह किया था।

(xi) **मेहरौली (28º30'N–77º10'E)-** मेहरौली गुप्त काल से संबंधित स्थल है। यह स्थल भारत की राजधानी दिल्ली में स्थित है। यहाँ से चंद्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) का एक लौह स्तंभ पाया गया है, जो 1600 वर्षों से उसी प्रकार बिना जंग लगे खड़ा है।

अध्याय
12

गुप्तोत्तर काल
(Post-Gupta Period)

मैप-12.1

(i) **मदुरै (9º92'N–78º11'E)**- मदुरै तमिलनाडु राज्य का एक ज़िला है। ईसा की आरंभिक शताब्दियों में यहाँ पांड्य शासकों का शासन था। बाद में पूर्व मध्यकाल में यहाँ पुन: पांड्यों का शासन स्थापित हुआ। आगे अलाउद्दीन खिलजी के काल में मलिक काफूर ने यहाँ आक्रमण किया। मदुरै संगमकालीन पांड्य शासकों की राजधानी थी। यह मोतियों के लिये प्रसिद्ध था। मदुरै शिक्षा का भी एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। मदुरै में ही प्रथम तथा तृतीय संगम सभाओं का आयोजन कराया गया था। कौटिल्य ने मदुरै का उल्लेख सूती वस्त्र के प्रसिद्ध केंद्र के रूप में किया है। यूनान तथा रोम के कई यात्रियों ने मदुरै की यात्रा की तथा पांड्य शासकों के साथ व्यापारिक संबंधों की स्थापना की।

(ii) **तंजौर (10º78'N–79º13'E)**- तंजौर वर्तमान में तमिलनाडु राज्य का एक ज़िला है। गुप्तोत्तर काल में यहाँ चोलों का शासन स्थापित हुआ। चोल शासक राजराजा प्रथम ने यहाँ वृहदेश्वर मंदिर का निर्माण 1010 ई. में कराया। तंजौर हस्तकला, काँच पर चित्रकारी, हाथ के बुने रेशम एवं काँसे की वस्तुओं के लिये प्रसिद्ध है।

(iii) **मैसूर (12º29'N–76º63'E)**- मैसूर वर्तमान में कर्नाटक राज्य का एक ज़िला है। चौथी शताब्दी ई. के आस-पास यहाँ पश्चिमी गंगों का शासन स्थापित हुआ। पश्चिमी गंग अधिकांश काल में पल्लवों के सामंत रहे। इनकी पहले की राजधानी कोलार में थी जो सोने की खान के लिये प्रसिद्ध है।

(iv) **महाबलीपुरम् (12º62'N–80º19'E)**- वर्तमान में तमिलनाडु राज्य के कांचीपुरम ज़िले में अवस्थित है। महाबलीपुरम् में पल्लव शासकों ने कई मंदिरों का निर्माण कराया। महाबलीपुरम् का शोर मंदिर (तटीय मंदिर) काफी प्रसिद्ध है जो पल्लव शासक नरसिंह वर्मन द्वितीय द्वारा बनवाया गया। शोर मंदिर द्रविड़ शैली का प्रथम मंदिर माना जाता है।

(v) **वातापी (15º55'N–75º40'E)**- वातापी चालुक्यों की राजधानी थी जो वर्तमान में कर्नाटक के बागलकोट ज़िले में अवस्थित है। वातापी के चालुक्यों में ही पुलकेशिन द्वितीय नामक महान शासक हुआ जिसने नर्मदा नदी के तट पर हर्षवर्धन को पराजित किया। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने वातापी की यात्रा की थी।

(vi) **एहोल (16º02'N–75º88'E)**- एहोल वर्तमान में कर्नाटक के बागलकोट ज़िले में अवस्थित है। एहोल से हमें रविकीर्ति के द्वारा लिखी गई ऐहोल प्रशस्ति प्राप्त हुई है। इसी प्रशस्ति लेख से पता चलता है कि पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को पराजित किया था। यहाँ से एहोल मेगुती का जैन मंदिर भी प्राप्त हुआ है।

(vii) **गौड़ (24º52'N–88º8'E)**- (गौड़/गौर Ganda/Gour) वर्तमान में पश्चिम बंगाल राज्य के मालदा नामक ज़िले के अंतर्गत आता है। यहाँ का शासक शशांक था जिसने मालवा के शासक देवगुप्त के साथ मिलकर हर्षवर्धन के बहनोई ग्रहवर्मा का वध कर दिया था। आगे इसी स्थान पर पाल तथा सेन वंश का शासन स्थापित हुआ।

(viii) **प्राग्ज्योतिषपुर (26º23'N–91º93'E)**- प्राग्ज्योतिषपुर वर्तमान में असम की राजधानी गुवाहाटी के पास अवस्थित है। प्राग्ज्योतिषपुर कामरूप राज्य की राजधानी थी। कामरूप का शासक भाष्करवर्मन हर्षवर्धन का मित्र था। ह्वेनसांग ने भास्करवर्मन के काल में प्राग्ज्योतिषपुर की यात्रा की थी।

(ix) **कन्नौज (27º07'N–79º92'E)**- कन्नौज उत्तर प्रदेश राज्य का एक ज़िला है। हर्षवर्धन ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। कन्नौज ऊँचे स्थान पर स्थित था अत: इसको किलाबंद करना आसान था। फिर कन्नौज दोआब के मध्य में स्थित था अत: दोआब के पूर्वी एवं पश्चिमी दोनों बाजुओं पर नियंत्रण रखने के लिये सैनिक जल एवं स्थल दोनों मार्गों से आ-जा सकते थे।

(x) **थानेश्वर (29º96'N–76º83'E)**- थानेश्वर में पुष्यभूति नामक व्यक्ति ने अपनी सत्ता स्थापित की। आगे इसी पुष्यभूति का वंशज हर्षवर्धन हुआ। थानेश्वर वर्तमान में हरियाणा राज्य के कुरुक्षेत्र ज़िले में स्थित है। थानेश्वर हिंदू धर्म के अनुयाइयों के लिये पवित्र स्थल है, चीनी यात्री ह्वेनसांग ने थानेश्वर की यात्रा की थी तथा इसे एक समृद्धशाली नगर बताया था।

अध्याय
13

राजपूत काल (Rajputa Period)

मैप-13.1

(i) **धार (22°59'N–75°30'E)**- धार मध्य प्रदेश राज्य में स्थित एक ज़िला है। धार को प्रतिहार शासक मिहिरभोज ने अपनी राजधानी बनाया। चालुक्य शासक सोमेश्वर प्रथम आहवमल्ल ने उसकी राजधानी धार पर आक्रमण करके उसे विनष्ट कर दिया। उदयपुर अभिलेख से ज्ञात होता है कि मिहिरभोज ने अपने राज्य में अनेक मंदिरों का निर्माण कराया।

(ii) **भोजपुर (23°6'N–77°35'E)**- भोजपुर की स्थापना प्रतिहार शासक मिहिरभोज ने की थी जो वर्तमान में मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन ज़िले में अवस्थित है। ऐसा माना जाता है कि मिहिरभोज संस्कृत का एक प्रकांड विद्वान था जिसने भोजशाला नामक संस्कृत विद्यालय का निर्माण कराया था।

(iii) **उज्जैन (23°17'N–75°79'E)**- उज्जैन वर्तमान में मध्य प्रदेश राज्य का एक ज़िला है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार प्रतिहार भारत के मूल निवासी थे और इन्होंने गुर्जर प्रदेश (उज्जैन) में अपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित की। उज्जैन में ही महाकाल शिव का मंदिर अवस्थित है। हरिद्वार, प्रयाग, नासिक के बाद उज्जैन वह चौथा स्थान है जहाँ प्रत्येक 12 वर्ष पर क्रम से कुंभ का आयोजन किया जाता है।

(iv) **खजुराहो (24°51'N–79°55'E)**- खजुराहो वर्तमान में मध्य प्रदेश राज्य के छतरपुर ज़िले में स्थित विश्व विरासत स्थल है। खजुराहो में चंदेल शासकों के द्वारा कई मंदिरों का निर्माण कराया गया। इन मंदिरों में कंदारिया महादेव का मंदिर, चौंसठ योगिनी मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, लक्ष्मण मंदिर उल्लेखनीय हैं।

(v) **महोबा (25°28'N–79°87'E)**- महोबा वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित एक ज़िला है। यह चंदेल राजपूतों की राजधानी थी। चंदेलों ने यहाँ मदन सागर एवं कीतर सागर नामक झीलों का निर्माण करवाया जो आज भी दर्शनीय हैं। आल्हा एवं ऊदल नामक वीर महोबा से ही संबंधित थे।

(vi) **वाराणसी (25°28'N–82°96'E)**- वाराणसी उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित एक धार्मिक ज़िला है। महाजनपद काल से ही वाराणसी प्रसिद्ध था। राजपूत काल में गहड़वाल वंश के संस्थापक शासक चंद्रदेव ने वाराणसी पर अपना अधिकार कर लिया तथा इसे अपनी राजधानी बनाया। आगे 1085 ई. में गहड़वालों ने गुर्जर प्रतिहारों का अंत करके कन्नौज पर कब्ज़ा जमाया और उसे अपनी राजधानी बनाया।

(vii) **कालिंजर (25°29'N–80°19'E)**- कालिंजर वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के बांदा ज़िले में स्थित है। कालिंजर के किले की स्थापना दसवीं सदी में चंदेल शासकों ने की थी। बाद में यहाँ रीवा के सोलंकी शासकों ने अपना अधिकार स्थापित किया। कालिंजर के किले पर ही विजय प्राप्त करने के दौरान शेरशाह सूरी मारा गया था।

(viii) **अजमेर (26°44'N–74°63'E)**- अजमेर राजस्थान राज्य में स्थित एक ज़िला है। ऐसा माना जाता है कि चौहान शासक अजयराज ने (1105-1130 ई.) अजमेर नगर की स्थापना की थी। अजमेर चौहानों की सत्ता का केंद्र था। पुष्कर नामक प्रसिद्ध तीर्थस्थल जो सृष्टि के सृजनकर्त्ता ब्रह्मा से संबंधित है इसी अजमेर ज़िले में स्थित है।

(ix) **कन्नौज (27°07'N–79°92'E)**- कन्नौज उत्तर प्रदेश का एक ज़िला है जो इत्र के लिये जाना जाता है। हर्षवर्धन के काल से ही कन्नौज का तेज़ी से उत्थान हुआ। आगे कन्नौज में आयुध शासकों का शासन स्थापित हुआ। आयुध शासकों को लेकर प्रतिहारों एवं पालों में आपसी प्रतिद्वंद्विता सामने आई। 1170 ई. में गहड़वाल शासक जयचंद्र कन्नौज का शासक बना जो मुहम्मद गोरी से पराजित हुआ।

(x) **दिल्ली (28°36'N–77°13'E)**- महाभारत काल के इंद्रप्रस्थ को ही वर्तमान में दिल्ली कहा जाता है। तोमर शासक अनंगपाल ने 'ढिल्ली' नामक शहर की स्थापना की थी जिसे बाद में चौहान शासक विग्रहराय चतुर्थ अथवा बीसलदेव ने तोमरों से छीन लिया और 'दिल्ली' नाम रखा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456